॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

॥ चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम् ॥

विषय सूची

॥ अथ चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम् ॥ 3

भवदीय :

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष
श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय: ॥

॥ श्री हरि ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ अथ चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम् ॥

श्रीमद भगवत पूज्यपाद आद्य शङ्कराचार्य प्रणीतम्

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः ।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्याशीवायुः ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ।
प्राप्त सन्निहिते मरणे नहि, नहि रक्षति डुकृञ् करणे ॥ १ ॥

भगवति प्रकृति देवी का प्रबल चक्र चल रहा है। इसमें दिन होता है, रात्रि होती है, सायं काल तथा प्रातः काल होता है और शिशिर वसन्त आदि ऋतुओंका भी आगमन होता है। इस प्रकार काल अपनी गति से चल हुआ खेल कररहा है और साथ ही हमारी आयुभी बीतती जाती है तिसपर भी हमलोग आशारूपी वायुके चक्कर में आकर इधर उधर भटकते फिरते हैं उसको छोडते नहीं हैं । अतः गुरु उपदेश करता है कि हे मूर्ख, इस मिथ्या आशा को छोड़कर गोविन्द का भजन कर । यदि तू गोविन्द को नहीं भजेगा तो मरणकाल समीप आनेपर डुकृञ् करणे' आदि सूत्र तेरी रक्षा नहीं कर सकेंगे ॥ १ ॥

अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः ।
करतलभिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुञ्चत्याशापाशः ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥२॥

शीतकाल में प्रातःकाल ठण्ड दूर करने के लिये सन्मुख अग्नि रक्खी है और पृष्ठभाग में सूर्य से गर्मी ले रहे हैं और रात्रि के समय शीत के मारे घुटनों के बीच शिर दबाकर बैठे हैं, भिक्षा मागकर खाते हैं, और गृह न होने से वृक्षके नीचे निवास करते हैं ऐसी दशा होने पर भी आशारूपी पाश (बन्धन) को तोड़कर गोविन्द का भजन नहीं करते। हे मूर्ख, यदि मुक्ति प्यारी है तो आशाको छोड़ दो। तुमसे बारम्बार यही निवेदन है कि गोविन्द का भजन करो ॥ २ ॥

यावद्वित्तोपार्जनसक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः ।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे वार्ता पृच्छति कोऽपि न गेहे ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥ ३ ॥

जबतक धन कमाने की शक्ति है तबतक परिवारके लोग भी प्रेम करते हैं परन्तु जब वृद्धावस्था आनेपर शरीर जीर्ण और दुर्बल होजाता है तब घर में कोई बात भी नहीं पूछता अतः हे मूर्ख ! यह सब माया प्रपञ्च छोड़कर गोविन्दुका भजन कर ॥३॥

जटिलो मुण्डी लुञ्चितकेशः काषायाम्बरबहुकृतवेषः ।
पश्यन्नपि नहि पश्यति मूढ़ उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः ॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥ ४ ॥

सिर घुटा हुआ है, दाढ़ी के केश लुचे हुए हैं, नानाप्रकार के गेरुए वस्त्र पहने हुए हैं किन्तु इस संसार को देखताहुआ भी अन्धे की तरह नानाप्रकार के रूप बनाकर पेट ही भरा करता है-हे मूर्ख । यह पेटका पचड़ा छोड़कर गोविन्दका भजन कर ॥ ४ ॥

भगवद्गीता किञ्चिदधीता गङ्गाजललवकणिकां पीता।
सकृदपि यस्य मुरारिसमच तस्य यमोऽपि न कुरुते चर्चा ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥५॥

जिस पुरुष ने थोड़ी सी गीता पढ़ी हो, गङ्गा जल के एक कण का भी पान किया हो और एक बार भी भगवान की पूजा की हो तो उसकी यमराज कभी चर्चा नहीं करते अतः हे मूर्ख! तू गोविन्द का भजन कर ॥५॥

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम् ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥६॥

अङ्ग गल गया है, बाल पक गये है, मुखमें एक भी दान्त नहीं रहा, वृद्धावस्था आगई है, लकड़ी के सहारे चलते हैं तिसपर भी आशा

नहीं छूटती । मूर्ख, इस आशा को छोड़कर गोविन्द का भजन कर ॥ ६ ॥

बालस्तावत्क्रीडासक्तस्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः।
वृद्धस्तावचिन्तामग्नः परे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥७॥

बाल्यावस्था खेलने में बितायी, युवावस्था में स्त्री में आसक्त रहे, वृद्धावस्था में चिन्ताने घेर लिया परब्रह्म में चित नहीं लगा अतः हे मूर्ख ! अब तो गोविन्द का भजन कर ॥ ७ ॥

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम् ।
इह संसारे खलु दुस्तारे कृपया पारे पाहि मुरारे ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥८॥

बार बार जन्म और मरण हुआ तथा बार बार माताके गर्भ में शयन करना पड़ा परन्तु इस दुस्तर (कठिनाई से पार होसकने वाले) संसार में आकर कभी यह भी नही कहा कि "हे मुरारी ! इस जन्ममरण के दुःख से मेरी रक्षा करो' अतः हे मूर्ख! अब गोविन्द का भजन कर ॥८॥

पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः।
पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षं तदपि न मुञ्चत्याशामर्षम् ॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥९॥

लगातार दिन, रात, पक्ष महिने, उत्तरायण, दक्षिणायन तथा वर्ष व्यर्थ चले जारहे हैं तब आशा और द्वेष नहीं छूटते। हे मूर्ख ! इस मायाजालको छोड़ कर गोविन्दका भजन कर ॥ ९ ॥

वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः।
नष्टे वित्ते कः परिवारो ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥१०॥

जैसे युवाकाल बीतनेपर कामविकार, जल सूखने पर सरोवर और धन न रहने पर परिवार सब निष्फल है उसी प्रकार तत्वज्ञान होजाने पर। यह मायानिर्मित संसार तुच्छ प्रतीत होता है अतः हे मूर्ख इस मिथ्या श्रमको छोड़ कर तत्वज्ञान की प्राप्ति के लिये गोविन्दुका भजन कर ॥ १० ॥

नारीस्तनभरनाभिनिवेशं मिथ्यामायामोहावेशम् ।
एतन्मांसवसादिविकारं मनसि विचारय वारंवारम् ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥ ११ ॥

कामिनियोंके उन्नत स्तनों और नाभि प्रदेश को, तथा मायामय बेश को देखकर मुग्ध मत होओ किन्तु मनमें वारंवार ऐसा विचार करो

कि यह सब माँसका विकृत रूप है। ऐसा विचार कर भ्रमको छोड़ दो और गोविन्द का भजन करो ॥ ११ ॥

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारं त्यक्त्वा विश्व खमविचारम् ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥१२॥

तुम कौन हो, मैं कौन हूँ, कहाँ से आया, कौन मेरी माता है। और कौन पिता है इन सब झूटे विचारों को तथा संसार को असार और स्वप्नवत् समझ कर उसका त्याग करो और गोवन्दका भजन करो ॥ १२ ॥

गेयं गीतानामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम् ।
नेयं सज्जनसङ्गे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम् ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥ १३॥

हजारो वार गीता का पाठ करो, निरन्तर भगवान के रूप का ध्यान करो, सज्जन पुरुषों की संगति करो, दीन दुःखियों की धन से सहायता करो और गोविन्द के नाम का भजन करो इसमें कल्याण है ॥१३॥

यावज्जीवो निवसति देहे कुशलं तावत्पृच्छति गेहे ।
गतवति वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥१४॥

जबतक शरीर में प्राण रहताहै तभीतक घरमें परिवार के लोग कुशल समाचार पूछते हैं किन्तु जब प्राण शरीरसे निकल जाता है तो उस मृत काया को देख कर स्त्री भी डरती है और जिस देह का प्रेम से आलिङ्गन करती थी उसके समीप जानेमें भय खातीहै अतः हे मूर्ख ! गोविन्द का भजन कर ॥१४॥

सुखतः क्रियते रामाभोगः पश्चाद्धन्तशरीरे रोगः ।
यद्यपि लोके मरणं शरणं तदपि न मुञ्चन्ति पापाचरणम् ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥१५॥

सुखकी इच्छा से स्त्री के साथ विषय भोग करते हो परन्तु दुःख की बात है कि अन्तमें शरीर सुख न पाकर व्याधिसे पीड़ित होजाता है। यह जानते हो कि इस संसार में आकर मरना निश्चय है फिरभी पाप करना नहीं छोड़ते। हे मूर्ख ! पाप से मुख मोड़ो और गोविन्द से प्रीति जोड़ो ॥ १५ ॥

रथ्याचर्पटविरचितकन्थः पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थः ।
नाहं न त्वं नायं लोकस्तदपि किमर्थं क्रियते शोकः ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥१६॥

गली के कुचले हुए घास फूस की बनी हुई कन्था है, पुण्य और पाप से रहित मार्ग है, न मैं हूँ न तुम हो, और न यह संसार है फिर व्यर्थ क्यों शोक करते हो । शोक को छोड़ो और गोविन्द का भजन करो ॥ १६ ॥

कुरुते गङ्गासागरगमनं व्रतपरिपालनमथवा दानम् ।
ज्ञानविहीनं सर्वमनेन मुक्तिनं भवति जन्मशतेन ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते ॥१७॥

चाहे गङ्गा, सागर आदिक तीर्थों की यात्रा करो, अनेक प्रकार के व्रतों का पालन करो अथवा दान दो, किन्तु यह सब होते हुए भी ज्ञान न होने पर सौ जन्म में भी मुक्ति नहीं होसकती अतएव हे मूर्ख जीव ! माया के सब प्रपञ्चोंको त्याग कर गोविन्द का तू भजन कर जिससे तेरा कल्याण होगा और तू जन्ममरण के बन्धन से छूटकर परम को प्राप्तहोगा ॥ १७ ॥

हरिः ॐ तत्सत् । ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

॥ इति चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम् संपूर्णम् ॥